छन्द

सर्व स्वरूपं आदि अनूपं, भूमि भूपं भयभाना।

अन्त न ऊपं छाय न धूपं, काढत कूपं धर ध्याना।

रहस्यारामं दायक धामं, नितनिष्कामं निर्बानी।

पाद नमामं निशिदिन शांम, श्री टेऊँरामं गुरूज्ञानी।

छन्द- चावल चन्दन कुंगुं केसर, फूलों की बरखा बरसाओ।

नृसिंह गामुख बेरी बाजा, तबला सुरन्दा झांझ बजाओ।

भर भर दीपक पूर्ण घी से, अगरबत्ती अरू धूप जलाओ।

आरती साज कर□ बहु सुन्दर, सद्गुरू की जयकार बुलाओ।

छन्द

आशवन्दी गुरू त□ दर आई, त□ बिन ठौर न काई।

तू हरि दाता तूं हरि माता, मेरी आश पुजाईं।

पाइ पलउ मैं पेर प्यादी, आयसि हेत मंझाईं।

तन मन धन अर्दास करे मैं, मांगत नाम सनेही।

नाम तुम्हारा साबुन करसां, धासां पाप सभेईं।

कहे टेऊँ गुरु लाक्र तीन में, आवागमन मिटाईं।